International Journal of Information Movement *Vol. 8 Issue IX* *(January, 2024)*
Website: www.ijim.in *ISSN: 2456-0553 (online)* **Pages 25-27**

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में सरदार पटेल का योगदान

डॉ॰ पुष्पा
विभागाध्यक्ष इतिहास
बाबू अनन्त राम जनता महाविद्यालय,
कौल (कैथल)

Email: drpushpatamak@gmail.com

शोध

प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में सरदार पटेल का योगदान पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया हैं ।

सरदार वल्लभ भाई पटेल किसी भी परिचय के मोहताज नहीं है। उन्होंने जो त्याग, समर्पण, कुर्बानी देश के लिए की है वो इतिहास के पत्रों में हमेशा ही स्मरणीय रहेगा। भारत को आजादी के इतिहास में उनका नाम सदैव स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा। ऐसी महान विभूति का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को नडियाद, गुजरात में एक कृषक परिवार में हुआ था। उसके पिता झवेरभाई पटेल एवम् माता लाडबा देवी थी। सरदार पटेल की शिक्षा पर बचपन से ही विशेष ध्यान दिया गया। मात्र 16 साल की आयु में सरदार पटेल का विवाह झावेरबा के साथ हुआ परन्तु उनका विवाह उनकी पढ़ाई में बाधक नहीं बना, और लन्दन जाकर उन्होंने बैरिस्टर की पढ़ाई पूरी की व वापस आकर अहमदाबाद में वकालत करने लगे। सरदार पटेल महात्मा गांधी के विचारों से इतने प्रभावित हुए कि भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े।

सरदार पटेल ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपनी भागीदारी गुजरात के खेड़ा जिला सत्याग्रह से शुरू की। महात्मा गाँधी जी की अपील पर सरदार पटेल ने अपनी वकालत छोड़कर इस आन्दोलन में गाँधी जी के साथ आ गए। सरदार पटेल ने भयंकर सूखे से ग्रसित लोगों से अपील की कि वो ब्रिटिश सरकार को कर न दें। कड़े संघर्ष के बाद ब्रिटिश सरकार लोगों के सामने झुकी और उस वर्ष करों में राहत प्रदान की। यह सरदार बल्लभ भाई पटेल की पहली राजनीतिक सफलता थी। 1928 ई॰ में सरदार पटेल ने बारडोली सत्याग्रह में एक बार फिर से किसानों को सफल नेतृत्व प्रदान किया और बारडोली के किसानों ने उन्हें सरदार की उपाधि से सम्मानित किया। महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन 1920-22, सविनय अवज्ञा आन्दोलन 1930-1934 और भारत छोड़ो आन्दोलन 1942 में भी सरदार पटेल ने अद्वितीय योगदान दिया। सभी आन्दोलनों में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें यरवदा जेल में महीनों बन्द रखा लेकिन किसी भी आन्दोलन में सरदार पटेल ने हार नहीं मानी और

आजादी की लड़ाई लड़ते चले गए। सरदार पटेल ने हमेशा देश को सर्वोपरि रखा कभी भी अपने हितों की परवाह नहीं की। उनकी यह महानता इस घटना से सिद्ध होती है की कि 11 जनवरी, 1909 को सरदार पटेल को अपनी पत्नी को मृत्यु का तार मिला, जिसे पढ़कर उन्होंने वो पत्र अपनी जेब में रख लिया। जैसे कुछ हुआ ही नहीं लगातार दो घंटे की बहस कर उन्होंने केस जीत लिया। बहस पूर्ण हो जाने के बाद जब न्यायाधीश व अन्य लोगों को खबर मिली कि पटेल की पत्नी का निधन हो चुका है, तब सरदार पटेल को इस बारे में पूछा तो पटेल ने उत्तर दिया कि उस समय मैं अपना फर्ज निभा रहा था, जिसका शुल्क मेरे मुवक्किल ने न्याय दिलवाने के लिए मुझे दिया था। मैं उनके साथ अन्याय कैसे कर सकता था। ऐसे त्याग, समर्पण, बलिदान, कर्तव्य परायणता इतिहास के पन्नों में कम ही मिलती है। उनके पास शेर जैसा कलेजा था। उनके महान त्याग की एक घटना हमें उस समय भी देखने को मिलती है, जब गाँधी जी के कहने पर वो प्रधानमंत्री को दौड़ से दूर हो जाते है। 2 सितम्बर, 1946 को सरदार पटेल को अंतरिम सरकार में गृह, सूचना एवम् प्रसारण मंत्री बनाया गया। 15 अगस्त 1947 को जब देश आजाद हुआ तो उस समय सरदार पटेल को भारत का उप-प्रधानमंत्री, गृहमंत्री सूचना एवम् प्रसारण मंत्री भी बनाया गया। भारतीय रियासतों के एकीकरण के लिए एक अलग विभाग को स्थापना की गई, जिसका अध्यक्ष सरदार पटेल को बनाया गया।

सरदार पटेल एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। उन्हें भारत का फौलादी पुरुष कहा जाता है। उन्होंने सूझ-बूझ से इस समस्या का समाधान करने का प्रयत्न किया और अन्त में सफलता भी हासिल की। उनके अदम्य साहस, सहनशीलता के द्वारा एकीकरण का कार्य शान्तिपूर्ण सम्पूर्ण किया गया। यह सरदार पटेल के नेतृत्व में एक तरह देश में एक रक्तहीन क्रान्ति थी। देशी राज्यों के एकीकरण में निश्चय ही पटेल की इस सफलता को हम बिस्मार्क के द्वारा जर्मनी एकीकरण, कावूर व गैरीबाल्डी के इटली एकीकरण से तुलना कर सकते है। 15 जनवरी 1947 को सरदार पटेल ने घोषणा की कि कांग्रेस मन्त्रिपरिषद से बाहर हो जायेगी यदि मुस्लिम लीग के सदस्य उसमें बने रहते हैं। उन्होंने यह भी कहा की या तो मुस्लिम लीग नये संविधान के निर्माण में सांझेदारी करें या फिर मन्त्रिमंडल छोड़ दे। इस तरह दो टूक बात कहने का साहस सिर्फ महान तेजस्वी, साहसी सरदार पटेल में ही था। भारत के वायसराय लार्ड वैवल भी सरदार पटेल की निपुणता, धैर्य से अच्छी तरह से परिचित थे। वो जानते थे कि सरदार पटेल निश्चय ही गाँधी जी व मुस्लिम लीग को मना लेंगे। लार्ड माउन्टबेटन भी सरदार पटेल के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुए। उनको पता था कि पटेल ने आन्तरिक राजनीति पर पकड़ बना रखी है और गृहमंत्री होने के नाते वह राजनीतिक नियुक्तियों को नियन्त्रित कर रहे थे। 25 मार्च, 1947 को वायसराय माउंटबेटन, पटेल के आकर्षक और मृदुल

स्वभाव से बहुत प्रभावित हुए। वह पटेल को दृढ़ता और यथार्थ पराकाष्ठा से भी काफी प्रभावित थे।

सरदार पटेल के हाथों में जब देशी रियासतों का विभाग आया तो सरदार इस कठिन चुनौती का सामना करने के लिए मैदान में कूद पड़े और तीन वर्ष के अल्प समय में ही ऐसी स्थिति पैदा कर दी जिससे ऐसा प्रतीत होने लगा कि मानों देश को उन संकटों का कभी सामना ही नहीं करना पड़ा था। उनके महान नेतृत्व में भारतीय जनता को यह अवसर मिला कि व अपनी एकता के आधार पर आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में प्रगति कर सके। स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही सरदार पटेल ने यह अनुभव कर लिया था कि सबसे पहली समस्या जो उन्हें हल करनी पड़ेगी, रियासतों के एकीकरण की थी। अपने विशाल हृदय, दूरदर्शिता और उदारता का उपयोग करते हुए उन्होंने प्रत्येक बाधा को दूर किया और पहले रक्षा, विदेशी मामलों और संचार के विषयों में देशी रियासतों को शामिल किया, फिर उनका संगठन करके और अन्त में पूरी तरह से केन्द्र के ढाँचे में लाकर सारे देश को विधान की दृष्टि से एक ही नहीं अपितु सामान्य भी बना दिया। संसार के किसी भी देश के इतिहास में ऐसा उदाहरण नहीं मिलता, जिसमें इतने थोड़े समय में इतने कम आदमियों का उपयोग करने के लिए कुछ हद तक तैयार भी कर लिया था लेकिन सरदार पटेल ने अपनी दूरदर्शिता एवं सतर्कता से उन्हें भारतीय संघ में शामिल करके हिन्दूस्तान को टुकड़े-टुकड़े होने से बचा लिया। उसने बड़े साहस से चर्चिल को भी कहा कि यदि यह सोचता है कि हिन्दुस्थान को बचाने वाला वही है, तो मेरा कहना यह है कि उसको यह फैसला कर लेना चाहिए कि यह अपने इग्लैंड को बचाए।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में सरदार पटेल ने हमेशा अहम् भूमिका निभाई। मुस्लिम लीग ने 1946 में पाकिस्तान प्राप्ति के लिए सीधी कार्यवाही प्रारम्भ कर दी, जिसके कारण सारे देश में साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे। मुस्लिम लीग के सदस्य अन्तरिम सरकार में शामिल होने के बाद कांग्रेस के मन्त्रियों के लिए सरदर्द बन गये। ऐसी स्थिति में नेहरू ने तंग आकर ये शब्द कहे "हम सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए सिर कटवाने को तैयार हो गये।" ऐसी परिस्थितियों में गाँधी जी को मनाते हुए सरदार पटेल ने कहा कि "यदि हमारे शरीर का कोई हिस्सा गल जाये तो हमें उस हिस्से को तुरन्त कष्ट देना चाहिए ताकि सारे शरीर में जहर न फैल सके।" 25 नवम्बर, 1948 को भी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में भाषण देते हुए सरदार पटेल ने कहा कि "मैंने महसूस किया है कि यदि हम पाकिस्तान की स्थापना के लिए न मानते, तो भारत बहुत से छोटे-छोटे टुकड़ों में बट जाता और बिल्कुल नष्ट भ्रष्ट हो जाता? पद सम्भालने के बाद मुझे अनुभव हुआ कि हम विनाश की तरफ बढ़ रहे है। केवल एक पाकिस्तान नहीं बनता, बल्कि अनेक बनते।" नवम्बर, 1949 में

संविधान सभा में भाषण देते हुए सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा कि "मैं देश के बंटवारे के लिए उस समय माना, जब इसके अतिरिक्त और कोई चारा नही रहा। हम उस समय ऐसी अवस्था में पहुँच गए, यदि हम देश का बंटवारा न मानते, तो सब कुछ हमारे हाथ से चला जाता।

अन्ततः हम देखते है कि सरदार पटेल एक दृढ़ इरादे वाले व्यक्ति थे। वो महान प्रतिभाशाली, कूटनीतिज्ञ व राजनीतिज्ञ थे। अपने बहादुरी भरे कार्यों के कारण ही उन्हें आज हम लौह पुरुष के रूप में जानते है। बारडोली सत्याग्रह में अपने अमूल्य योगदान के लिए लोगों ने उन्हें सरदार की उपमा दी। आजादी के बाद भी उन्होंने भारत के विकास और भारत को जोड़ने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह सच है कि गाँधी जी ने कांग्रेस में प्राणों का संचार किया तो नेहरू ने उसे कल्पना और दृष्टिकोण को विस्तृत आयाम दिया। पर इसके अलावा जो शक्ति और ताकत व सम्पूर्णता कांग्रेस को प्राप्त हुई, वह सरदार पटेल को ही कार्यक्षमता का ही परिणाम था। देशी रियासतों के एकीकरण के जटिल कार्य को पटेल ने बहुत ही सादगी, शालीनता, दृढ़ता एवम् कूटनीति से सुलझाया सरदार पटेल के ऐतिहासिक कार्यों में सोमनाथ मन्दिर का पुनर्निर्माण, गाँधी स्मारक निधि की स्थापना, कमला नेहरू अस्पताल की रूपरेखा आदि कार्य सदैव स्मरण किए जाते रहेंगे। इस प्रकार सरदार वल्लभ भाई पटेल आधुनिक भारत के निर्माता, किसानों की आत्मा, भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के महान सेनानी थे। उसमें कौटिल्य जैसी कूटनीतिज्ञ व शिवाजी जैसी दूरदर्शिता थी, जिसके सहारे उन्होंने ब्रिटिश सरकार को हर मोर्चे पर टक्कर प्रदान की।

सन्दर्भ सूची :

1. रजनी पाम दत्त, आज का भारत
2. पट्टाभि सीतारमैया, कांग्रेस का इतिहास
3. प्यारे लाल, महात्मा गाँधी की लास्ट फेज, वोल 2, पृ॰ 153, 154
4. मेमन, वी॰पी॰, दि ट्रान्सफर ऑफ पावर इन इंडिया, पृ॰ 385
5. डॉ॰ एस॰ एस॰ नागोरी, भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन
6. डॉ॰ एस॰ एस॰ नागोरी, भारत के स्वतन्त्रता सेनानी
7. ताराचन्द, भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास
8. कृष्ण दत्त, भारत का स्वतन्त्रता आन्दोलन एवम् राष्ट्रीय एकता
9. सुमित सरकार, आधुनिक भारत